ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 190-193**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

प्रव्रजन के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

डॉ0 मनीष कुमार पाण्डेय

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-19.06.2022, Revised-24.06.2022, Accepted-28.06.2022 E-mail: p.manish40@gmail.com

सारांशः – ***प्रव्रजन के विभिन्न सैद्धान्तिक विचार अथवा परिप्रेक्ष्य हैं, जो इसकी प्रक्रिया को समझने में हमारे सामने एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। प्रव्रजन के सैद्धान्तीकरण में हुए विभिन्न योगदानों पर ध्यान दृष्टव्य किया जाय तो दो प्रमुख परिप्रेक्ष्य अर्थशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीय रूप में सामने आते हैं। सामान्यतया प्रव्रजन को एक आर्थिक प्रघटना के रूप में देखा जाता है, परन्तु इसके सामाजिक परिप्रेक्ष्य पर भी विचारकों की बराबर दृष्टि रही है। आर्थिक कारकों का महत्व होते हुए भी अनेक सामाजिक कारक प्रव्रजन और उसके परिणामस्वरूप परिवर्तन को सम्भव बनाते हैं। इसको लेकर अर्थशास्त्र, भूगोल एवं समाजशास्त्र में कई सिद्धांत विकसित किये गए। प्रस्तुत शोध पत्र में मानव प्रवास को बढ़ावा देने एवं उसे बाधित करने वाले कारकों से सम्बंधित समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– प्रव्रजन, उत्प्रवास, अप्रवास, प्रकार्य, आधुनिकीकरण, भावनात्मक तटस्थता, रैमिटेंस, पुश–पुल थ्योरी।

प्रव्रजन मानव इतिहास के प्रारंभ से ही जनसांख्यिकी परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण घटना रही है। प्रव्रजन इतिहास के प्रारंभ से ही जनसांख्यिकी परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण घटना रही है। के सैद्धांतिकरण पर परिचर्चा उन्नीसवीं सदी से प्रारम्भ हुई। अर्थशास्त्रियों, भूगोलविदों, जनांकविदों एवं समाजशास्त्रियों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रव्रजन से सम्बन्धित सैद्धान्तिक साहित्य जनांकिकी में हुआ एक हालिया विकास है। प्रव्रजन के सैद्धान्तिक निर्माण में कतिपय बाधाएँ हैं, क्योंकि प्रव्रजन नियमविहीनता के लिए विख्यात माना जाता है। प्रव्रजन की प्रक्रिया की सैद्धान्तिक रूपरेखा निर्धारण की कठिनाइयों के बावजूद इससे सम्बन्धित कुछ सन्तोषजनक सैद्धान्तिक प्रारूप विकसित किए गये हैं। वर्तमान में प्रव्रजन से सम्बन्धित सिद्धान्तों की दिशा में विविध महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं, फिर भी प्रव्रजन से सम्बन्धित किसी सिद्धान्त या प्रारूप का निर्माण कठिन है, क्योंकि–

1. जनसंख्या गतिशील तत्व है और अधिक तेजी के साथ बदलती रहती है।
2. किसी व्यक्ति के प्रव्रजन करने के निर्णय के पीछे कोई निश्चितता नही होती, अतः इससे सम्बन्धित आकड़ें या तो प्राप्त नहीं होते या प्राप्त होते हैं, तो संदेहास्पद होते हैं।

लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर गतिशील क्यों होते हैं, उनकी गतिशीलता किस दिशा में होती है, उनकी गतिशीलता और स्थान विशेष को गन्तव्य बनाने का प्रारूप क्या है और प्रव्रजन के कारण और परिणाम क्या हैं, आदि प्रव्रजन से सम्बन्धित ऐसे तात्कालिक मुद्दें हैं, जिनपर विभिन्न दृष्टिकोण के आधार पर परिचर्चा की जाती है। प्रव्रजन के विभिन्न सैद्धान्तिक विचार अथवा परिप्रेक्ष्य हैं, जो इसकी प्रक्रिया को समझने में हमारे सामने एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। प्रव्रजन के सैद्धान्तीकरण में हुए विभिन्न योगदानों पर ध्यान दृष्टव्य किया जाय तो दो प्रमुख परिप्रेक्ष्य अर्थशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीय रूप में सामने आते हैं। सामान्यतया प्रव्रजन को एक आर्थिक प्रघटना के रूप में देखा जाता है, परन्तु इसके सामाजिक परिप्रेक्ष्य पर भी विचारको की बराबर दृष्टि रही है। इसके उपरान्त भी इस तथ्य से इनकार नही किया जा सकता कि प्रव्रजन के अर्थशास्त्रीय उपागम पर आधारित सिद्धान्त समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों से कहीं अधिक व्यवस्थित एवं सार्वभौमिक हैं। अर्थशास्त्रीय संदर्भ को वरीयता देने वाले अर्थशास्त्रीय उपागमों में ई0जी0 रैवन्सटीन का सैद्धान्तीकरण, एवरेट ली का पुश–पुल सिद्धान्त एवं एम0पी0 टोडारो का लागत एवं लाभ से सम्बन्धित प्रारूप महत्वपूर्ण है। वहीं दूसरी तरफ प्रव्रजन के प्रारूप को समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से विश्लेषित करने में संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक उपागम, सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धान्त, सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण के विभिन्न सिद्धान्त, सामाजिक उद्विकास के सिद्धान्त आदि को आधार बनाया जाता है।

प्रव्रजन के सैद्धान्तीकरण पर सर्वप्रथम कार्य सम्भवतः 19वीं सदी के महान भूगोलवेत्ता रैवन्सटीन (सन् 1885 एवं 1889) ने अपने दो लेखों से किया, जिसमें उन्होने 'द लॉ ऑफ माइग्रेशन' का प्रारूप तैयार किया। उन्होनें प्रव्रजन को विकास के एक प्रभावी अंग के रूप में देखते हुए यह माना कि प्रव्रजन का प्रमुख आधार अर्थशास्त्रीय है। अपने सिद्धान्त में रैवन्सटीन ने प्रव्रजन के सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्यों को एक व्यापक रूप रेखा दिया, जिसमें प्रव्रजन के कुछ नियम प्रस्थापित किए। रैवन्सटीन का नियम ही आगे चलकर पुश–पुल सिद्धान्त के निर्माण के लिए आधार तैयार करता है। रैवन्सटीन का प्रारूप विकल्प के साथ ही समाजशास्त्रीय रूप से अधिक स्वीकार्य सैद्धान्तिक प्रारूपों को विकसित करता है, जो प्रव्रजन से जुडे हुए हैं। यह परिप्रेक्ष्य, जिसमें लोगों की गतिशीलता निम्न आय क्षेत्र से अधिक आय क्षेत्र की तरफ होती है, विभिन्न जनांकविदों, भूगोलवेत्ताओं एवं

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

अर्थशास्त्रियों के अध्ययन कार्यों में प्रभावी रूप से स्वीकार्य की जाती है (केटलेस एवं मिलर 2003, 22)।

अर्थशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत दूसरा उपागम परिस्थितियों से जुड़ा हुआ आकर्षण एवं विकर्षण (पुश–पुल) कारकों पर आधारित विश्लेषण है। यह प्रव्रजन का एक पक्षांतर प्रारूप है। यह उपागम आनुभविक परीक्षण पर आधारित सामान्यीकरण से सम्बन्धित नहीं है। यह एक परिस्थितिजन्य उपागम है, जो मूल स्थान एवं गन्तव्य स्थान की सामाजिक–आर्थिक विभिन्नताओं से जुड़ा हुआ है। यही विभिन्नताएं प्रव्रजन की गतिशीलता को निर्धारित करती हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रव्रजन गन्तव्य स्थान के आकर्षक कारक एवं मूलस्थान के विकर्षक कारकों के बीच होने वाली परस्पर क्रिया का परिणाम है। यह उपागम अपने अन्तर्गत उन सभी कारको को शमिल करता है, जो कि जनसंख्या की गतिशीलता को निर्धारित करते हैं। इस सिद्धान्त के साथ जुड़ा हुआ प्रमुख नाम समाजशास्त्रीय एवरेट ली का है। ली ने रैवन्सटीन के प्रव्रजन के सिद्धान्त की सत्यता का परीक्षण किया।

अर्थशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत तीसरा प्रमुख अर्थशास्त्रीय उपागम प्रव्रजन के लागत एवं लाभ प्रारूप से सम्बन्धित है। इस उपागम से जुड़ा प्रमुख नाम एम0पी0 टोडारो है। उन्होने प्रव्रजन को गतिशीलता की लागत के लिए उपलब्ध धन, गन्तव्य स्थान की यात्रा एवं जीवनशैली में निवास करने की क्षमता के आधार पर व्याख्यायित किया है। टोडारो ने नये रोजगार को खोजने एवं उसके लिए होने वाले प्रशिक्षण एवं गन्तव्य स्थान पर रोजगार ढूढने के खर्च को भी इसके साथ जोड़ा है। उनके अनुसार प्रव्रजन व्यय की लागत तथा प्रव्रजन से होने वाले लाभ के बीच का खेल है। हैरिस तथा टोडारो के अनुसार प्रव्रजन ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के बीच वास्तविक आय में पायी जाने वाली विभिन्नता के साथ–साथ उसके अवसरों की लालसा का भी परिणाम है।

ये सभी अर्थशास्त्रीय उपागम एक दूसरे से भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। किन्तु अर्थशास्त्र से सम्बन्धित प्रव्रजन के कारक सामान्य और अति विशिष्ट हैं। वे अर्थशास्त्रीय ढाँचे में हैं, लेकिन सामाजशास्त्र से भी सम्बन्ध रखते हैं। जो लोग प्रव्रजन का अर्थशास्त्रीय कारण देते हैं, वह भी यह मानते हैं, कि प्रव्रजन गांव की सामाजिक संरचना का परिणाम है। इसी कारण से अर्थशास्त्रियों द्वारा दिये गये प्रव्रजन के अर्थशास्त्रीय आधार समाजशास्त्रीय दृष्टि से भी प्रासंगिक हैं। प्रव्रजन का अर्थशास्त्रीय आधार अर्थशास्त्रियों की ही एक पृथक्कृत सम्पत्ति नहीं है। समाजशास्त्री किसी एक कारण को प्राथमिकता नहीं देते हैं, वरन् प्रव्रजन के विभिन्न अर्न्तसम्बन्धित कारकों पर चर्चा करते हैं। समाजशास्त्री प्रव्रजन को सम्पूर्ण स्वरूप में देखते हैं, और उसकी प्रक्रिया एवं महत्व की एक समावेशी व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार अन्य जनांकिक प्रक्रियाओं की तरह प्रव्रजन एक सामाजिक रूप से प्रेरकत्व और आदर्शात्मक रूप से निर्धारित व्यवहार है। मूलस्थान एवं गन्तव्य स्थान के सामाजिक आधारों पर समाजशास्त्रियों का जोर है। प्रव्रजन की व्याख्या समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर करने वाले विचारकों के बीच प्राथमिक रूप से संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक उपागम सबसे महत्वपूर्ण है। यह प्रव्रजन को संगठित सामाजिक प्रक्रिया एवं विस्तृत सामाजिक व्यवस्था के एक आंतरिक हिस्से के रूप में देखने पर ध्यान केन्द्रित करता है। समाज ही प्रव्रजन को सामाजिक संदर्भ प्रदान करता है और प्रव्रजन की प्रक्रिया की सामाजिक स्थिति तय करता है। सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक परिस्थिति प्रव्रजन की प्रक्रिया और दशा को प्रभावित करती है। इस प्रकार जनसंख्या की गतिशीलता सांस्कृतिक अथवा आदर्शात्मक अथवा संस्थागत रूप से निर्धारित प्रघटना बन जाती है। ऐसी घटनाएं संस्थागत अनुरूपता पर आधारित होती हैं। जनसंख्या की स्थान सम्बन्धी गतिशीलता की दशा गन्तव्य एवं मूल स्थान के विभिन्न स्तरों की स्थितियों द्वारा निर्धारित की जाती है। इस प्रकार संरचनात्मक प्रकार्यवादियों के अध्ययन की रूचि सामाजिक परिस्थितियों के अध्ययन, स्थान सम्बन्धी गतिशीलता के कारण एवं परिणाम तथा जनसंख्या की स्थिरता प्रव्रजन के विभिन्न पक्षों एवं अन्य सामाजिक प्रक्रियाओं के अर्न्तसम्बन्ध, प्रव्रजन द्वारा समाज में प्रस्तुत सामाजिक प्रकार्य और प्रकार्यों का आधुनिकीकरण तथा सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव, प्रव्रजन के बदलते प्रतिमान और प्रवासियों के उभरते सामाजिक लक्षण और प्रव्रजन के स्वीकृत आयामों का समाज को प्रभावित करने और उसको व्यवस्थित करने की प्रवृत्ति में होती है। प्रव्रजन के इन पक्षों के प्रभाव एवं इससे सम्बन्धित समझ के आधार पर संरचनात्मक–प्रकार्यवादी विचारक प्रव्रजन की प्रक्रिया का विश्लेषण करते हैं।

इस उपागम के अन्तर्गत कुछ विशिष्ट प्रकार की समाजशास्त्रीय सूत्र विधियाँ हैं, जो प्रवजन के अध्ययन के लिए अर्थपूर्ण है। उदाहरण के लिए प्रतिमान चर का पारसोनियम प्रारूप जनसंख्या की गतिशीलता एवं स्थिरता के विश्लेषण के लिए निर्देशित रूप रेखा का काम करता है। पारसन्स के चरों के विश्लेषण का एक जोड़ा भावनात्मक एवं भावनात्मक तटस्थता या उदासीनता से जुड़ा मूल्य प्रव्रजन से सम्बन्धित परम्परा से आधुनिकता की तरफ होने वाले एक प्रारूपीय स्वरूप परिवर्तन को दिखाता है। यह उन परिस्थितियों की व्याख्या करता है, जो जनसंख्या की गतिशीलता को सक्रिय या निष्क्रिय करता है। भावनात्मक चर व्यक्ति के भावनात्मक लगाव को व्यक्त करता है, जो उसका अपने परिवार, पारिवारिक संसाधन और परम्परा,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्ध तथा मूल निवास स्थान एवं पड़ोस से होता है। यह लगाव सामाजिक व्यवस्थितता तथा अर्न्तसम्बन्धित सम्पर्कों के कारण कार्य करता है। सामाजिक भावनात्मकता, जनसंख्या की गतिशीलता को रोकता है। संस्थागत पुष्टि के माध्यम से भावनात्मकता, जनसंख्या की स्थान सम्बन्धी गतिशीलता के लिए रूकावट का कार्य करता है। जैसे ही भावनात्मकता, भावनात्मक तटस्थता में बदलता है, जनसंख्या की स्थान परिवर्तन की गतिशीलता में तीव्रता आ जाती है। इस प्रकार पारसन्स का उपागम प्रव्रजन को समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से परीक्षित करने का सैद्धान्तिक आधार उपलब्ध करता है। सामाजिक स्तरीकरण का सिद्धान्त भी प्रव्रजन से सम्बन्धित अन्य सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य उपलब्ध कराता है। यह समाज के विभिन्न समाजिक वर्गों के चरित्र पर केन्द्रित होता है और उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों को प्रकाश में लाता है। इसमें सम्बन्धित सिद्धान्तकारों के अनुसार वर्गगत श्रेणियाँ स्वयं का अवलम्बन करती हैं तथा ठीक इसी समय स्थान सम्बन्धी एवं लम्बवत् गतिशीलता के प्रतिमान के द्वारा आशावादी संतोष के प्रति झुकाव रखती हैं। ये समाजिक वर्ग की प्रवृत्ति प्रव्रजन की प्रवृत्ति से जुड़ी होती है, क्योंकि गतिशीलता की प्रक्रिया का चरित्र समाजिक वर्ग की प्रवृत्ति से प्रभावित होने के सम्बन्धों पर प्रकाश डालता है। वर्गगत प्रकार्य एक दबाव कारक के रूप में कार्य करता है और लोगों को अपनी सामाजिक हैसियत बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। वर्गगत् कारक प्रव्रजन के संदर्भ में अपने निवास स्थान के प्रति आकर्षक कारक का काम भी करते हैं, जो लोगों को रोकते हैं और निवास स्थान से बाहर न निकलने का दबाव बनाते हैं। इस प्रकार वर्गगत कारक स्थान सम्बन्धी गतिशीलता को आंतरिक दबाव से बढ़ाते हैं और गन्तव्य स्थान के साथ अनुकूलन और सामंजस्य की प्रवृत्ति का विकास करते हैं। यह स्थान सम्बन्धी गतिशीलता को रोकता भी हैं। वर्गीय समाज की परिस्थिति को देखा जाय तो प्रव्रजन एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में सामने आता हैं, और सामाजिक परिवर्तन का कारक बन जाता है।

सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण के विभिन्न सिद्धान्त भी प्रव्रजन से सम्बन्धित विचार उपलब्ध कराते हैं। उदाहरण स्वरूप सांस्कृतिक उपागम इस सम्बन्ध में विशेष महत्व रखता है, क्योंकि उनका प्रभाव सांस्कृतिक आधार पर होने वाले परिवर्तन एवं रूपान्तरण से है। वे प्रस्तावित करते हैं, कि संस्कृति, सामाजिक परिवर्तन का कारण एवं प्रभाव दोनों है। इस संदर्भ में देखा जाय तो प्रव्रजन एक सांस्कृतिक परिवर्तन है। यह सांस्कृतिक आधार पर होने वाले स्थान सम्बन्धी परिवर्तन का कारण एवं परिणाम दोनों है। जाति, वर्ग एवं इससे सम्बन्धित स्थानों में आय की असमानता, संसाधन अवसर एवं इससे सम्बन्धित जीवन शैली, कार्य एवं कार्य संस्कृति से सम्बन्धित ग्रामीण एवं नगरीय लोगों के विभिन्न मूल्य, पारिवारिक परम्परा के आयामों, प्रकार्य एवं संगठन तथा सामाजिक सम्बन्ध का जाल आदि सांस्कृतिक कारण हैं, जो लोगों को किसी स्थान को छोड़ने अथवा बने रहने से सम्बन्धित निर्णय का दबाव बनाते हैं। प्रव्रजन की क्रिया दूसरे प्रसंगो में देखा जाय तो, इन सांस्कृतिक कारकों को भी प्रभावित करता है। यह प्रव्रजन के लिए आकर्षण एवं विकर्षण दोनों ही कारक का काम करता है। प्रव्रजन सांस्कृतिक कारकों के कारण होता है और गन्तव्य स्थान पर प्रव्रजन सांस्कृतिक परिणाम के रूप में सामने आता है। नगरों की प्रवृत्ति, सामाजिक संगठन तथा सामाजिक संरचना ग्रामीण प्रवासियों द्वारा धीरे–धीरे आत्मसात की जाती है। प्रवासियों को साथ नगरों में जानेवाली सांस्कृतिक परम्परा सांस्कृतिक सम्पर्क के कारण, गन्तव्य स्थान के सांस्कृतिक रूपान्तरण, एकीकरण, पर संस्कृतिग्रहण तथा सामाजीकरण के द्वारा परिवर्तित होती है। ग्रामीण प्रवासियों के व्यापक चरित्र में होने वाले परिवर्तन में जाति चेतना से वर्ग चेतना, संकीर्णता से सार्वभौमिकता, सामान्य से जटिल, व्यक्तिगत से अवैयक्तिकता के रूप में एक प्रकार का अवस्था परिवर्तन सामने आता है। ग्रामीणों एवं प्रवास स्थान के निवासियों के बीच होने वाला सांस्कृतिक परिवर्तन अथवा लम्बे समय का प्रवास भी दो परम्पराओं की आंतरिक मौलिकता को बदल नहीं पाता है और परम्पराओं का सम्बन्ध एक दूसरे से बना रहता है। इस प्रकार सांस्कृतिक एवं अर्थशास्त्रीय रेमिटेन्स द्वारा सांस्कृतिक निरन्तरता बनी रहती है। इस तरह सांस्कृतिक उपागम प्रव्रजन को एक सांस्कृतिक प्रघटना के रूप में देखता है और इसकी विवेचना सांस्कृतिक दृष्टि के आधार पर करता है। समाजशास्त्रीय उपागमों में सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त प्रव्रजन तथा सामाजिक परितर्वन के लिए एक अन्य दृष्टिकोण उपलब्ध कराता है। यह सिद्धान्त यह प्रस्थापित करता है, कि समाज अपनी अंतरिम समरूपता को बनाये रखता है एवं इसको एक रेखीय उद्विकास की ओर प्रेरित करता है। यह सिद्धान्त प्रगति के सार्वभौमिक नियम की श्रेणियों के साथ सम्बन्ध रखता है तथा समाज के उद्विकास की ओर ध्यान केन्द्रित करता है, जो समरूप से असमरूप और बहुवृंद की ओर होता है। सामाजिक रूपान्तरण के रेखीय दिशा की ओर होने वाली इस प्रक्रिया में व्यवस्था के प्रत्येक अंग परिवर्तन की ओर उन्मुख होते हैं। एकीकरण के एक स्वरूप में समायोजन करते हैं और उच्च सामाजिक स्वरूप में सम्मिलित होते हैं। जनांकिकी उद्विकास सामाजिक उद्विकास का अनुसरण करता है, जिसमें प्रव्रजन एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। दुर्खीम के सामाजिक उद्विकास के प्रकार में प्रव्रजन एक आवश्यक सामाजिक परिस्थिति है, जो एक प्रकार के सामाजिक क्रम को दूसरे रूप में बदलने की सामाजिक प्रक्रिया पर दबाव डालता है। जनसंख्या की सक्रिय गतिशीलता समाज पर सामान्य, खण्डवत, एवं मशीनी समाज

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

से जटिल, संरचनात्मक रूप विभेदीकृत, पारस्परिक रूप से निर्भरता एवं सावयवी सम्बन्धी एवं श्रम विभाजन की ओर ले जाती है। समाज का इतिहास देखा जाय तो पता चलता है, कि जब पुरातन पितृसत्तात्मक कृषि संक्रमण एवं अर्धनगरीय औद्योगिक से उत्तर औद्योगिक समाज की तरफ बढ़ता है, तो उद्विकास का प्रत्येक स्तर जनसंख्या की गतिशीलता के दबाव में सामने आता है। दूसरे शब्दों में प्रव्रजन सामाजिक रूपान्तरण की प्रक्रिया द्वारा तीव्र किया जाता है। इस प्रकार प्रव्रजन सामाजिक उद्विकास का कारण एवं परिणाम बन जाता है, जो सामाजिक उद्विकास एवं सामाजिक रूपान्तरण की सक्रिय प्रक्रिया के एक हिस्से का प्रकटीकरण होता है। यह समय, स्थान एवं परितर्वन की प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा है। प्रव्रजन की दर, गति एवं दूरी सामाजिक उद्विकास की प्रक्रिया एवं प्रगति के साथ बढ़ती जाती है।

सामाजिक उद्विकास का सिद्धान्त इससे सम्बन्धित जनांकिक संक्रमण जैसे विभिन्न सिद्धान्तों को सामने लाता है। यह जनंसख्या की वृद्धि का ऐतिहासिक विभाजन करता है और सामाजिक जनांकिक परिवर्तन के तीन स्तरों के प्रारूप के रूप में जाना जाता है। सामाजिक उद्विकास के विभिन्न अभिलक्षण प्रव्रजन से सम्बन्धित है। यह सिद्धान्त उद्विकासीय मत पर आधारित है। यह प्रगति और रूपान्तर पर केन्द्रित होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रगति पूर्ण रूप से परिभाषित उद्विकास में स्तरों का अनुसरण करते हुए पुरातन से आधुनिक अथवा विकास के आधुनिक स्तर तक पहुंचता है। इस सिद्धान्त में यह विश्वास किया जाता है, कि उद्विकास का प्रत्येक स्तर सामाजिक बदलाव के नये चक्र को सामने लाता है, जो लोगों को उन्नत सामाजिक अवसरों की खोज के लिए दबाव डालता है। इस प्रकार प्रव्रजन की गति एवं तीव्रता प्रगति के प्रत्येक सफल स्तर की गति एवं तीव्रता के साथ चलती रहती है। संक्रमण के प्रत्येक स्तर पर संतुलन ऐतिहासिक एवं सामाजिक जनांकिक कारकों के बीच के पारस्परिक क्रिया का कारण बन जाता है। इन सभी कारकों के बीच प्रव्रजन की प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

इस प्रकार आर्थिक एवं समाजशास्त्रीय विचारों के आधार पर प्रव्रजन के दो बड़े परिप्रेक्ष्य हैं। निष्कर्षतः वे दिखाते हैं, कि प्रव्रजन एवं जटिल एवं बहुप्रकारीय घटना है। प्रव्रजन की एक कारकीय व्याख्या, जो अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गयी, एक संकीर्ण विचार के रूप में प्रस्फुटित होती है। इसके विपरीत समाजशास्त्रियों का विचार सम्पूर्णता की दृष्टि में है, जो अपने साथ अर्थशास्त्रीय कारकों को भी समाहित किए हुए है। इन विचारो की दृष्टि में, उदाहरणस्वरूप एक ग्रामीण क्षेत्र में उत्प्रवास को वैकल्पिक आय से उस क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक तत्वों एवं इसके व्यापक सामाजिक पर्यावरण के संदर्भ में व्याख्यायित किया जाता है। समाजशास्त्रीय उपागम प्रव्रजन के पाठ्य को एक सामाजिक परिवेश उपलब्ध कराता है, लेकिन संदर्भ और पाठ्य का सम्बन्ध कोई साधारण सम्बन्ध नहीं है। प्रव्रजन का सामाजिक संदर्भ, विभिन्न सैद्धान्तिक उपागमों जिसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, जनांकिक, विकासीय एवं मनोवैज्ञानिक कारक सम्मिलित है, से लिया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Castles, S. Miller, M.J. (2003), " The Age of Migration", Palgrave Machmillan", New York.
2. Harris, J.R. & Todaro, M.P. (1970), " Migration, Unemployment and development: A two sector analysis", American Economic Review, 60: 126-42.
3. Kundu, Amitabh and Gupta, S. (1966), "Migration, Urbanisation and Regional inequality", EPW, vol. 31, No. 52, December, Mumbai.
4. Lee, Everett, S. (1966), "A theory of Migration", Demography vol.3, No.1.
5. Lewis, W.A. (1954), "Economic Development with Unlimited supplies of Labour", Manchester School of Economic and social studies 22:139-91.
6. Ravenstein, E.G. (1885 and 1889), "The Laws of Migration", Journal of the Royal statistical social, vol. 48, No-2 and vol. 52, June.
7. Todaro, M.P. (1969), " A Model of Labour Migration and Urban Unemployment in Less- Developed countries", American Economic Review, 59: 138-48.
8. Todaro, M.P. (1976), "Internal Migration in Developing Countries", International Labour Organisation, Geneva.

*****